Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh.

Date- Class - V
Subject - Hindi Literature Page - 1
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग - 5
वसंत (कविता)
कवि 'आरसी प्रसाद सिंह'

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

यह पाठ -13 'वसंत' कक्षा पाँचवी की हिन्दी साहित्य का है। इस पाठ में हम 'आरसी प्रसाद सिंह' द्वारा लिखी कविता वसंत पढ़ेंगे।

बच्चो! वसन्त ऋतु वर्ष की एक ऋतु है, जिसमें वातावरण प्राय: सुखद रहता है। भारत में यह ऋतु फरवरी से मार्च तक होती है। इस ऋतु की विशेषता है मौसम का गरम होना, फूलों का खिलना, पौधों का हरा भरा होना और बर्फ का पिघलना। होली का त्योहार वसंत ऋतु में मनाया जाता है। इस मौसम में चारो ओर हरियाली होती है। बच्चो! अब हम कविता की पंक्तियाँ पढ़ेंगे एवं उनके बारे में समझेंगे।

मैंने वसंत के पुष्पों से,
पूछा - तुम कितने सुंदर हो?
वे बोले - हाँ, हमने पाया,
है विधि से सुंदरता का वर।
हम उपवन में खिलते प्रतिदिन,
प्रतिक्षण हँसते ही रहते हैं।
हम झड़ जाते, मुरझा जाते,
पर, यह न किसी से कहते हैं।

Scanned with CamScanner

Date- Class- V
Subject - Hindi Literature Page-2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

बच्चो कविता की इन पंक्तियों की व्याख्या जानने से पहले हम इनमें आए कठिन शब्दों के अर्थ जान लेते हैं।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पुष्पों	फूलों	प्रतिक्षण	हर पल
विधि	ब्रह्मा	झड़	गिर जाना
उपवन	बगीचा	मुरझा	सूख जाना
प्रतिदिन	हर रोज़		

भावार्थ :- बच्चो! कविता की इन पंक्तियों में कवि लिखते हैं कि जब मैंने वसंत ऋतु में खिले फूलों से पूछा कि तुम कितने सुंदर हो, जो सबका मन मोह लेते हो। इस पर फूलों ने उत्तर दिया कि हाँ हम बहुत सुंदर हैं क्योंकि हमें ब्रह्मा जी से सुंदरता का वर मिला है। फूल कवि से कहते हैं कि हम हररोज़ बगीचे में खिलते हैं और हरपल हँसते ही रहते हैं। हम अपनी सुंदरता से दूसरों को भी प्रसन्न रखते हैं परन्तु जब हम वृक्ष से झड़ कर गिर जाते हैं या सूख जाते हैं, तो यह दुख किसी से नहीं कहते हैं।

बच्चो! अब हम कविता की अगली पंक्तियाँ पढ़ेंगे।

मैंने वसंत के तरुओं से,
पूछा- तुम हो कितने शीतल?
वे बोले - हाँ, हममें आए

Scanned with CamScanner

Date- Class- V
Subject- Hindi Literature Page- 3
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

हैं नूतन ये पल्लव कोमल
इस मिट्टी का लेकर, देते,
हम फूल और फल मधुर पके।
यह सघन हमारी छाया है,
रह जाते राही जहाँ थके।

बच्चो! इन पंक्तियों के अर्थ जानने से पहले हम इनमें आए कठिन शब्दों के अर्थ जानेंगे।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तरुओं	पेड़ों	मधुर	मीठे
शीतल	शांत	सघन	घने
नूतन	नया	राही	रास्ते पर चलने वाले
पल्लव	पत्ते		

भावार्थ :- बच्चो! कविता की इन पंक्तियों में कवि लिखते हैं कि जब मैंने वसंत ऋतु में पेड़ों से पूछा कि तुम कितने शांत कैसे हो, तब उन पेड़ों ने कहा हाँ वसंत ऋतु आते ही हम पर नए कोमल पत्ते आने लगे हैं। हम इस मिट्टी से जो खाना और पानी लेते हैं उसके बदले में हम फूल और मीठे - मीठे फल देते हैं। हमारी घनी छाया में थके हुए राहगीर आराम भी करते हैं। इस प्रकार कविता की इन पंक्तियों से हमें परोपकार की शिक्षा मिलती है, जिस प्रकार पेड़ शांत रहकर दूसरों को फल और छाया देता है उसी प्रकार हमें भी अपने गुणों से दूसरों का भला करना

Scanned with CamScanner

Date – [illegible]   Class - V
Subject - Hindi Literature   Page - 4
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

करना चाहिए। बच्चो! आज हम यहीं तक कविता पढ़ेंगे। आशा है यह कविता आपको अच्छे से समझ आ गई होगी।

गृह कार्य

- बच्चो! इस कविता को ध्यान से समझने के लिए दो से तीन बार पढ़ें।
- इस पाठ के पृष्ठ - 105 पर लिखे शब्द - अर्थ अपनी हिन्दी साहित्य की उत्तर पुस्तिका में लिखें।

धन्यवाद!

Last page.

Scanned with CamScanner